27.

श्री अरविन्द के शैक्षिक दर्शन की शिक्षा में उपादेयता

प्रतिमा तिवारी
अतिथि प्रवक्ता
सी0एम0पी0 डिग्री कालेज
इलाहाबाद (इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद)

भारतीय उपमहाद्वीप सदैव से ही महापुरूषों के जन्मस्थली के रूप में गौरवमयी परम्परा को सजोने का कार्य करता रहा है। दैवीय एवं अध्यात्मिक शक्तियों के कारण ही भारतीय वसुन्धरा सदैव पुलकित एवं आनंदित स्वरूप में विश्व को अपनी तरफ आकर्षित करती है। इसी कड़ी में श्री अरविन्द जैसे आध्यात्मिक एवं अलौकिक महापुरूष का जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता के श्री कृष्णघन घोष के यहां हुआ था। श्री कृष्णघन घोष व्यवसाय से चिकित्सक एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रबल समर्थक थे। पाश्चात्य संस्कृति एवं ज्ञान के प्रति ज्यादा समर्पित थे।

इस प्रकार श्री अरविन्द का पालन पोषण सम्पन्न एवं पाश्चात्य सांस्कृतिक वातावरण में हुआ किन्तु बड़े होने पर श्री अरविन्द श्रीमद् भगवत् गीता से ज्यादा प्रभावित हुए। श्रीमद् भगवत् गीता के कर्मयोग एवं ध्यान योग का इनके जीवन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि इन्होने ध्यान योग को स्वयं के अभ्यास में शामिल किया।

श्री अरविन्द दूसरों को उपदेश एवं आत्मानुभूति हेतु प्रोत्साहित करने की अपेक्षा योग द्वारा समस्त मानवता के अज्ञान, अंधकार, एवं मृत्यु से लाभान्वित योग ज्ञान, प्रकाश एवं अमरतव की ओर ले जाने के पक्षधर थे। इसीलिए इनकी विचारधारा को सर्वांग दर्शन के रूप में प्रसिद्वि मिली।

श्री अरविन्द के अनुसार इस सृष्टि का निर्माणकर्ता ईश्वर है। श्री अरविन्द ने विकास सिद्वान्त के आधार पर सृष्टि निर्माण की व्याख्या की है। श्री अरविन्द के अनुसार विकास दो दिशाओं में होता है– आरोहण एवं अवरोहण।

आरोहण के माध्यम से ब्रह्म पदार्थ जगत का रूप धारण करता है। मनुष्य स्वयं के द्रव्य द्वारा आरोहण के माध्यम से सत् की प्राप्ति करता है। अवरोहण एवं आरोहण हेतु सात सोपानों का विचार श्री अरविन्द ने दिया है जो आरेख द्वारा प्रदर्शित है–

अवरोहण विकास क्रम	**आरोहण विकास क्रम**
सत्	द्रव्य
चित्त	प्राण
आनन्द	मानस
अतिमानस	अतिमानस
मानस	आनन्द
प्राण	चित्त
द्रव्य	सत्

अर्थात हम कह सकते हैं कि अवरोहण द्वारा सत् से द्रव्य का निर्माण एवं आरोहण द्वारा द्रव्य से सत् का निर्माण संभव है।

एवं ब्रह्म की तरफ जाया जा सकता है। मानव को श्री अरविन्द विकसित प्राणी मानते हैं। इनके अनुसार मानव जन्म से विकास के दो सोपान पार कर मानस सोपान पर पहुँचता है। जन्म के बाद आरोहण द्वारा मानस से अतिमानस अतिमानस से आनन्द एवं आनन्द से सत् की ओर बढ़ना होता है। श्री अरविन्द के अनुसार सत् + चित् + आनन्द की प्राप्ति ही प्रत्येक मानव का अन्तिम लक्ष्य है।

श्री अरविन्द के अनुसार द्रव्य ज्ञान भी व्यवहारिक जीवन हेतु आवश्यक है। इसलिए द्रव्य ज्ञान को भी मानव के विकास क्रम में मानव व्यवहार के रूप में प्रयोग में लाया जाना चाहिए। द्रव्य ज्ञान की अनुभूति के लिए ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण पर भी श्री अरविन्द ने जोर दिया है। श्री अरविन्द ने आत्मिक ज्ञान एवं द्रव्यज्ञान को मानव जीवन का आधार माना है। व्यवहारिक कर्तव्यों के पालन हेतु द्रव्य ज्ञान को ज्ञानेन्द्रियों द्वारा एवं आत्मिक ज्ञान के लिए क्रिया योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, तथा समाधि) को आवश्यक माना है।

श्री अरविन्द ने कहा– 'शिक्षा मानव के मस्ष्कि एवं आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान, चरित्र और संस्कृति को जागृत करती है।' अर्थात शिक्षा वही जो मानव के भौतिक, आत्मिक, और आध्यात्मिक पक्षों का विकास करें। इस प्रकार की शिक्षा को श्री अरविन्द जी ने सम्पूर्ण शिक्षा सम्बन्धी विचार 'नेशनल सिस्टम आफ एजुकेशन (National System of Education) तथा 'आफ एजुकेशन' (Off Education) पुस्तकों में प्रदर्शित किया है।

शैक्षिक उद्देश्य के रूप में श्री अरविन्द जी ने भौतिक विकास, आत्मिक विकास, मानसिक विकास, अन्तरात्मिक विकास, आध्यात्मिक विकास, इन्द्रिय प्रशिक्षण एवं विकासात्मक आरोहण प्रक्रिया के सोपानों का प्रशिक्षण योगाभ्यास के माध्यम प्रस्तुत करने का विचार प्रकट किया है। शिक्षा हेतु भौतिक विषयों के रूप में मानव हेतु मातृभाषा एवं राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय महत्व की भाषायें, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, विज्ञान, मनोविज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, कृषि, उद्योग, वाणिज्य एवं कला को प्रमुख विषयों को सन्दर्भित किया है। भौतिक क्रियाओं के अन्तर्गत खेल–कूद, व्यायाम, उत्पादन कार्य एवं शिल्प कौशलों के विकास को उपयुक्त क्रिया कलाप के रूप में श्री अरविन्द जी ने प्रस्तुत किया है। आध्यात्मिक विकास हेतु वेद, उपनिषद, गीता, धर्मशास्त्र, नितिशास्त्र , विभिन्न धर्म दर्शन को शैक्षिक पाठ्यक्रम के रूप में श्री अरविन्द जी ने परिभाषित किया है। आध्यात्मिक क्रियाओं के रूप में भजन, कीर्तन, ध्यान एवं योग को दैनिक क्रिया कलापों में शामिल किया है। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, सामान्य विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन, चित्रकला और खेलकूद, व्यायाम, बागवानी, भजन व कीर्तन को पाठ्यकम के रूप में संदर्भित किया है। माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच साहित्य, गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला खेल–कूद, व्यायाम, बागवानी, कृषि, अन्य शिल्प, भजन, कीर्तन, ध्यान व योग की पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बताया है।

शिक्षण विधियों के रूप में उपदेश, प्रवचन, व्याख्यान और अन्य मौखिक विधियों के प्रयोग को श्री अरविन्द जी स्वीकृति देते थे किन्तु रटने का वह विरोध करते थे। प्राथमिक स्तर पर कहानी विधि का प्रयोग करने का सुझाव देते थे। पाठ्य–पुस्तक प्रणाली का समर्थन करते थे। इनका मानना था कि बच्चों को ज्ञान की खोज के लिए तैयार करना चाहिए एवं बाद में पुस्तकें पढ़ने के लिए दी जानी चाहिए। सिर्फ पुस्तकों को रटाया नहीं जाना चाहिए। शिक्षण में क्रिया को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। प्रत्येक स्तर पर छात्रों को सहयोग दिया जाना चाहिए।

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाना चाहिए। शिक्षक का स्थान छात्रों के लिए पथ प्रदर्शक के रूप में होना चाहिए। शिक्षक छात्रों के अर्न्तनिहित ज्ञान का उद्भव करने में सहायक की भूमिका में प्रस्तुत होना चाहिए। शिक्षक, शिक्षार्थी को उपयुक्त सुझाव प्रदान करें जिससे शिक्षार्थी स्वयं की रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार स्वयं का विकास करने में सक्षम बन सके। शिक्षक को योग क्रियाओं का भी ज्ञान होना चाहिए जो छात्रों के ध्यान हेतु प्रयोग किया जा सके।

श्री अरविन्द शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र मानते है। प्रत्येक बालक विशिष्ट योग्यताओं एवं प्रतिभाओं से सम्पन्न होता है। इसीलिए शिक्षित करते समय शिक्षार्थी के व्यक्तिगत गुणों का ध्यान रखने के पक्ष में श्री अरविन्द जी अपना मत प्रस्तुत करते हैं। शिक्षार्थी को ब्रह्मचर्य एवं अनुशासित होना चाहिए। शिक्षार्थी के पर्यावरण को भी शिक्षा के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में स्वीकार करते है। शिक्षार्थी को ज्ञानेन्द्रियों के विकास के लिए अभ्यास हेतु तत्पर होना आवश्यक समझते हैं।

श्री अरविन्द के अनुसार विद्यालय शिक्षार्थी के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनो विकास के लिए उत्तरदायी है। विद्यालयी वातावरण का शिक्षार्थी की शिक्षा पर विशेष प्रभाव पड़ता है। मनुष्य के भौतिक विकास के लिए विद्यालयों में संसार की सभी श्रेष्ठ भाषाओं साहित्य सभ्यता और संस्कृति, गणित और विज्ञान आदि की शिक्षा का प्रबन्ध करने और आध्यात्मिक विकास के लिए बच्चों को श्रम करने, कर्तव्य पालन करने, मानव से प्रेम करने और ध्यान करने के अवसर देने पर बल देते थे। इनके अनुसार विद्यालय भौतिक प्रगति एवं योग साधना के केन्द्र होने चाहिए। विद्यालयों का वातावरण वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर निर्मित होना चाहिए। इनेक द्वारा स्थापित श्री अरविन्द आश्रम का 'श्री अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र' का महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र है।

श्री अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र एक आवासीय सह शिक्षा केन्द्र है जहाँ शिशु शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान की व्यवस्था है।

1. शिशु विहार – (किन्डरगार्टन, शिशु स्तर), आयु 3 से 5 वर्ष

   पाठ्यक्रम – 3 वर्षीय

2. भविष्य– आवनी (प्राथमिक स्तर) आयु 6 से 8 वष्र

   पाठ्यक्रम – 3 वर्षीय

3. प्रगति – प्रोगे (उच्च प्राथमिक स्तर) आयु 9 से 12 वर्ष

   पाठ्यक्रम – 3 वर्षीय

4. पूर्णता की ओर – (अंनाबा बैर ला पैर फैक्सिओ), माध्यमिक स्तर

   आयु 12 से 17 वर्ष पाठ्यक्रम – 6 वर्षीय

5. उच्चर्या (हायर कोर्स, उच्च शिक्षा स्तर), आयु 18–20 वर्षीय

   पाठ्यक्रम–3 वर्षीय

श्री अरविन्दो ने शिक्षा को भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति का एक सशक्त एवं आवश्यक साधन माना है। जिसके द्वारा मानव भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए माध्यात्मिक चिन्तन की तरफ योग साधना के माध्यम से स्वयं को अग्रसर करता हुआ सत् की प्राप्ति हेतु सदैव तत्पर रहता है अर्थात शिक्षा भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के मध्य सेतु का रूप धारण करके मानव को अज्ञान अंधेरा एवं मृत्यु से ज्ञान प्रकाश एवं अमरत्व की ओर अग्रसर करने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. लाल, रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ
2. सक्सेना, एन0आर0स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ
3. पाण्डेय, रामसकल, प्रमुख शिक्षा शास्त्रीय

❑❑❑